91 सूरए अश शम्स

आइए न्याय दर्शन के आधार पर आपकी दी हुई कुरान की आयतों (सूरज, चाँद, दिन, रात, आसमान) का विश्लेषण करते हैं:

आयत 1:

आयत का अनुवाद:
"सूरज की क़सम और उसकी रौशनी की।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा:
सूरज की कसम खाकर उसकी रौशनी की महत्ता बताई गई है।

हेतु:
आयत में सूरज की कसम खाकर उसकी रौशनी की बात की गई है, जिससे यह समझाया गया है कि सूरज और उसकी रौशनी महत्वपूर्ण हैं और उनकी क़सम एक गहरा संदेश देती है। परंतु यह कसम केवल सूरज की रौशनी तक सीमित रह गई है, जो तर्कसंगत दृष्टि से अपर्याप्त है क्योंकि प्रकृति में कई अन्य ऊर्जा स्रोत भी हैं।

उदाहरण:
वैज्ञानिक दृष्टि से सूर्य के प्रकाश का महत्व है, परन्तु अन्य तत्व जैसे चंद्रमा, ग्रह, और आकाशगंगा की भी अपनी भूमिका है। भगवद्गीता में कहा गया है कि सृष्टि में विविध शक्तियाँ समन्वित हैं, न कि केवल एक तत्व सर्वोपरि है।

उपनय:
इस आयत में केवल सूरज की रौशनी को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, जबकि वास्तविकता में यह एक सीमित दृष्टिकोण है जो व्यापक सृष्टि के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

निगमनः
यह आयत यह दावा करती है कि सूरज और उसकी रौशनी का महत्व सर्वोपरि है, लेकिन यह कारण न्याय और वैदिक दर्शन के आधार पर अपूर्ण और संकुचित है।

आयत 2:

आयत का अनुवादः
"और चाँद की जब उसके पीछे निकले।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः
प्रतिज्ञाः
चाँद सूरज के पीछे निकलता है।

हेतुः
यह आयत चाँद को सूरज के पीछे निकलने वाला बताती है, जो वैज्ञानिक दृष्टि से असत्य है क्योंकि चाँद स्वयं एक स्वतंत्र खगोलीय पिंड है जो सूर्य की रोशनी पर निर्भर होता है, लेकिन सूर्य के पीछे निकलना एक भ्रामक कथन है।

उदाहरणः
वैज्ञानिक खगोलशास्त्र के अनुसार, चाँद पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करता है और सूर्य की रोशनी पर निर्भर करता है। इसे वैदिक विज्ञान भी मानता है कि ग्रह अपनी-अपनी स्वतंत्र परिक्रमा करते हैं।

उपनयः
इसलिए चाँद को सूरज के पीछे निकलना कहना प्रमेय के सिद्धांत के विरुद्ध है क्योंकि यह वस्तु के ज्ञात स्वरूप (खगोलीय तथ्य) से मेल नहीं खाता।

निगमनः
यह आयत वास्तविक खगोलीय तथ्यों से भटकाव दिखाती है और न्याय दर्शन के प्रमेय तत्व के आधार पर इसे खारिज किया जा सकता है।

आयत 3:

आयत का अनुवाद:
"और दिन की जब उसे चमका दे।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपनमाना (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा:
दिन सूरज की रोशनी से चमकता है।

हेतु:
दिन के चमकने को सूरज की रोशनी से जोड़ा गया है, जो कि सामान्य ज्ञान और वैज्ञानिक तथ्य के अनुरूप है। परन्तु यह तुलना एक मात्र कारण तक सीमित है जबकि प्राकृतिक घटनाओं में कई कारण और प्रभाव होते हैं।

उदाहरण:
वैदिक विज्ञान में सूर्य की महत्ता स्वीकार की गई है, लेकिन उसके अतिरिक्त भी अन्य प्राकृतिक तत्त्व जैसे वायुमंडलीय प्रभाव और पृथ्वी की स्थिति को माना गया है।

उपनय:
इस आयत में दिन के चमकने को केवल सूरज की रोशनी से जोड़ना उपनाम के तत्व के हिसाब से आंशिक रूप से सही है, परंतु इसका दायरा सीमित है।

निगमन:
यह आयत प्राकृतिक घटना को सरलता से समझाती है पर व्यापकता के अभाव के कारण पूर्ण सत्य नहीं कह सकती।

आयत 4:

आयत का अनुवाद:
"और रात की जब उसे ढाँक ले।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा:
रात तब होती है जब सूरज की रौशनी छिप जाती है।

हेतु:
यह व्याप्ति बताती है कि रात का होना सूरज की अनुपस्थिति पर निर्भर है। पर यह संबंध पूरी प्रकृति में सर्वत्र लागू नहीं होता, जैसे कि कुछ क्षेत्रां में दिन और रात का अलग-अलग व्यवहार होता है (जैसे आर्कटिक क्षेत्र में ध्रुवीय रात)।

उदाहरण:
भारतीय ज्योतिष और वेदांग गणित में दिन-रात का निर्धारण पृथ्वी के अक्षीय झुकाव और परिक्रमा से होता है, जो सूरज की स्थिति पर निर्भर है लेकिन स्थूल रूप से व्याप्ति में सीमाएँ हैं।

उपनय:
इसलिए आयत का व्याप्ति तर्क पूरी प्रकृति के लिए सार्वभौमिक नहीं कहा जा सकता।

निगमन:
यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के अनुसार आंशिक सत्य प्रस्तुत करती है लेकिन सार्वभौमिक सत्य नहीं।

आयत 5:

आयत का अनुवाद:
"और आसमान की और जिसने उसे बनाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा:
आसमान का निर्माता एक सर्वोच्च शक्ति है।

हेतु:
 इस आयत में निर्माता के अस्तित्व का दावा किया गया है, परंतु यह बिना किसी प्रमाण या तर्क के किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्दादि) के बिना किसी वस्तु या शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

उदाहरण:
 उत्तरा मीमांसा और सांख्य दर्शन में परमात्मा और सृष्टि के कारणों का तर्कसंगत विश्लेषण मिलता है, जिसमें कारण-प्रभाव और अनुभवजन्य प्रमाण आवश्यक हैं।

उपनय:
 इस आयत में जो प्रमाण दिया गया है वह केवल शब्द (शाब्दिक) प्रमाण है, जिसका अनुभवजन्य समर्थन नहीं है।

निगमन:
 यह आयत बिना तर्क और प्रमाण के परोक्ष रूप में एक निर्माता की बात करती है, जो न्याय दर्शन के प्रमाणीकरण के मानदंडों के विरुद्ध है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना का सारांश
1	**हेतु**	**सूरज की रौशनी की कसम अपर्याप्त कारण प्रस्तुत करती है।**
2	**प्रमेय**	**चाँद का सूरज के पीछे निकलना खगोलीय तथ्य से विरोधी है।**
3	**उपनाम**	**दिन के चमकने का कारण सीमित रूप में केवल सूरज तक सीमित किया गया।**
4	**व्याप्ति**	**रात का सूरज की अनुपस्थिति से होना सर्वत्र सत्य नहीं।**
5	**प्रमाण**	**आसमान के निर्माता का दावा बिना तर्क और अनुभवजन्य प्रमाण के किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रकृति के प्राकृतिक और खगोलीय तत्वों के संबंध में प्रस्तुत तर्क सीमित और अपूर्ण हैं। विशेष रूप से, आयत 2 और 5 में वैज्ञानिक और दार्शनिक प्रमाणों का अभाव स्पष्ट है। न्याय दर्शन के प्रमेय, प्रमाण, हेतुवाद और व्याप्ति के तत्वों के अनुसार ये आयतें सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार्य नहीं हैं। वे प्रकृति की समग्रता और विविधता को ध्यान में नहीं रखतीं, जिससे उनका संदेश मानवता के लिए पूर्णतः उपयुक्त और तर्कसंगत नहीं ठहरता।

अगर आप चाहें तो इसी प्रकार अगली आयतों का भी विश्लेषण कर सकता हूँ।

आइए न्याय दर्शन के तत्वों के अनुसार इन पाँच आयतों का विश्लेषण करें, जिनमें ज़मीन, जान, उसके व्यवहार और सफलता- असफलता की बात कही गई है।

आयत 6:

"और ज़मीन की जिसने उसे बिछाया।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

प्रतिज्ञाः
ज़मीन को बिछाना एक सृजनात्मक कार्य है जिसे किसी ने किया है।

हेतुः
यह आयत मानती है कि ज़मीन को किसी ने "बिछाया" है, जैसे किसी ने चादर फैलाई हो। लेकिन यह प्रेक्षित सत्य (प्रमेय) नहीं है क्योंकि ज़मीन का आकार और विस्तार स्वाभाविक प्राकृतिक प्रक्रिया से हुआ है।

उदाहरणः
वैज्ञानिक भूगर्भशास्त्र में कहा गया है कि पृथ्वी की सतह प्लेट टेक्टोनिक्स और प्राकृतिक प्रक्रियाओं से बनी है, न कि किसी ने जानबूझकर उसे फैलाया।

उपनय:
 इसलिए ज़मीन को बिछाने का दावा प्राकृतिक प्रमाणों के विपरीत है, जो न्याय के प्रमेय तत्व के अनुरूप नहीं है।

निगमन:
 आयत का यह कथन वस्तुनिष्ठ प्रमाणों से मेल नहीं खाता, अतः प्रमेय के अनुसार असत्य है।

आयत 7:

"और जान की और जिसने उसे दुरुस्त किया।"

चुना गया न्याय तत्व:
 हेतु (Reason)

प्रतिज्ञा:
 जान को किसी ने सही और दुरुस्त किया है।

हेतु:
 यहां "जान" का आशय जीवात्मा या चेतना से हो सकता है, जिसको एक निर्माता ने सही रूप दिया। परंतु, दुरुस्त करने का तर्क बिना किसी स्पष्ट कारण या प्रमाण के दिया गया है।

उदाहरण:
 सांख्य दर्शन में जीव और प्रकृति की व्याख्या प्राकृतिक प्रक्रियाओं और कर्मफल के आधार पर होती है, न कि केवल एक कारण द्वारा दुरुस्त किए जाने के सिद्धांत पर।

उपनय:
 इसलिए यह कारण न्याय के हेतुवाद में कमजोर है क्योंकि यह तर्कसंगत प्रमाणों और अनुभव से समर्थित नहीं।

निगमन:
 आयत का यह तर्क बिना पर्याप्त कारण के है, अतः न्याय के अनुसार यह ठोस प्रमाण नहीं है।

आयत 8:

"फिर उसकी बदकारी और परहेज़गारी को उसे समझा दिया।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपनमाना (Comparison)

प्रतिज्ञा:
आदमी को उसकी बुरी और अच्छी प्रवृत्तियों का ज्ञान दिया गया है।

हेतु:
यह माना गया है कि इंसान को नैतिकता की समझ दी गई है, परंतु यह उपनाम पूर्ण रूप से न्यायसंगत नहीं है क्योंकि नैतिक ज्ञान का विकास सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत अनुभवों से होता है।

उदाहरण:
मनुस्मृति और भगवद्गीता में नैतिकता का विकास ज्ञान, योग और व्यवहार से होता है, जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए लागू होता है।

उपनय:
इसलिए नैतिकता को एक बाह्य शक्ति द्वारा सीधे "समझाना" कहना उपनाम तत्व के अनुरूप नहीं।

निगमन:
आयत नैतिक ज्ञान के स्रोत के बारे में अपूर्ण और संकुचित दृष्टिकोण रखती है।

आयत 9:

"(क़सम है) जिसने उस (जान) को (गुनाह से) पाक रखा वह तो कामयाब हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

प्रतिज्ञा:
जो जीवात्मा पवित्र रहता है, वही सफल होता है।

हेतु:
यह व्याप्ति बताती है कि पवित्रता सफलता का अपरिहार्य कारण है। परंतु वास्तविकता में सफलता के कई कारण हो सकते हैं – कड़ी मेहनत, भाग्य, ज्ञान आदि।

उदाहरण:
 भगवद्गीता में सफलता के लिए कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग सभी आवश्यक बताए गए हैं, केवल पवित्रता ही काफी नहीं।

उपनय:
 इसलिए यह व्याप्ति अत्यंत सीमित और अव्यापक है।

निगमन:
 यह व्याप्ति व्यावहारिकता और व्यापक सत्य से भटकाव करती है।

आयत 10:

"और जिसने उसे (गुनाह करके) दबा दिया वह नामुराद रहा।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमाण (Valid Knowledge)

प्रतिज्ञा:
 गुनाह करने वाला असफल होता है।

हेतु:
 यह कथन बिना स्पष्ट प्रमाण के दिया गया है क्योंकि सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से गुनाह और सफलता के बीच संबंध जटिल है।

उदाहरण:
 सांख्य और न्याय दर्शन में कर्मफल की व्याख्या गहन है, जिसमें गुनाह का दंड या सफलता जीवन के कई कारकों पर निर्भर करता है।

उपनय:
 इसलिए इस कथन को एक सार्वभौमिक प्रमाण मानना उचित नहीं।

निगमन:
 यह आयत सफलता और असफलता के बीच का कारण-प्रभाव संबंध बिना उचित प्रमाण के स्थापित करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना का सारांश
6	प्रमेय	ज़मीन के बिछाने का दावा प्राकृतिक साक्ष्यों के विरोध में है।
7	हेतु	जान को दुरुस्त करने का तर्क बिना स्पष्ट कारण के है।
8	उपनाम	नैतिकता को सीधे समझाना सामाजिक-सांस्कृतिक विकास को नजरअंदाज करता है।
9	व्याप्ति	पवित्रता और सफलता का संबंध अत्यंत सीमित और अव्यापक है।
10	प्रमाण	गुनाह और असफलता के बीच संबंध बिना स्पष्ट प्रमाण के स्थापित किया।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्राकृतिक और मानवीय तत्वों के सम्बन्ध में प्रस्तुत तर्क अनेक जगह अपर्याप्त, अपूर्ण और अनुभवजन्य प्रमाणों के बिना हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार ये तर्क पूर्ण सत्य या सार्वभौमिक नहीं हैं। वे मानव व्यवहार, नैतिकता और प्रकृति के जटिल स्वरूप को सरल और संकुचित तरीके से प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनका सन्देश तर्कसंगत और व्यापक नहीं बन पाता।

यदि आप चाहें तो आगे की आयतों का भी इसी प्रकार विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता हूँ।

आयत 11-15 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण और आलोचना

आयत 11:

क़ौम मसूद ने अपनी सरकशी से (सालेह पैग़ाम्बर को) झुठलाया।

चुना गया न्याय तत्व: Hetu **(कारण/तर्क)** और Pramana **(प्रमाण/साक्ष्य)**
प्रतीज्ञा (Pratijna):
क़ौम मसूद ने पैग़ाम्बर सालेह को झूठलाया।

हेतु (Hetu):
आयत में यह दावा किया गया है कि यह एक सत्य घटना है, लेकिन इसके समर्थन में कोई ऐतिहासिक या प्रमाणिक स्रोत नहीं दिया गया।

उदाहरण (Udaharana):
भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण में प्रमाण (Pramana) **अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसे न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष** (Pratyaksha), **अनुमान** (Anumana), **और शब्द** (Shabda) **को प्रमाण माना जाता है। किसी ऐतिहासिक घटना के लिए इनमें से किसी एक का स्पष्ट प्रमाण होना आवश्यक है।**

उपनय (Upanaya):
यह कथन बिना प्रत्यक्ष या विश्वसनीय शब्द प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है, इसलिए इसका तर्कसंगत आधार कमजोर है।

निगमन (Nigamana):
इसलिए यह आयत प्रमाण के नियम का उल्लंघन करती है और मानवता के लिए सर्वमान्य सत्य का दावाकर्ता नहीं बन सकती।

आयत 12:

जब उनमें का एक बड़ा बदबख़्त उठ खड़ा हुआ।

चुना गया न्याय तत्व: Prameya **(ज्ञान का विषय)** और Hetu **(कारण)**
प्रतीज्ञा (Pratijna):
एक व्यक्ति ने विरोध जताया, जो 'बदबख़्त' कहा गया।

हेतु (Hetu):
यह व्याख्या व्यक्ति की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करती है, पर इसका मापक और नैतिक आधार अस्पष्ट है।

उदाहरण (Udaharana):
गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) में कहा गया है कि कर्म का फल कर्म पर निर्भर करता है, न कि कुतर्क से किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना न्यायसंगत है।

उपनय (Upanaya):
यह आयत व्यक्ति की आलोचना बिना उचित तर्क या न्यायिक प्रक्रिया के करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के विरुद्ध है।

निगमन (Nigamana):
इस आयत में नैतिक न्याय और तर्क की कमी है, जो इसे मानवता के लिए अस्वीकार्य बनाती है।

आयत 13:

तो ख़ुदा के रसूल (सालेह) ने उनसे कहा कि ख़ुदा की ऊँटनी और उसके पानी पीने से तअर्रुज़ न करना।

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (व्याप्ति - अनिवार्य संबंध)
प्रतीज्ञा (Pratijna):
ऊँटनी और उसके पानी का दुरुपयोग न करें।

हेतु (Hetu):
यह नैतिक निर्देश है, परन्तु इसकी व्याप्ति और सार्वभौमिकता स्पष्ट नहीं है।

उदाहरण (Udaharana):
वैशेषिक दर्शन में पदार्थों का उचित उपयोग और संरक्षण पर बल दिया गया है।

उपनय (Upanaya):
यदि यह केवल एक विशिष्ट समुदाय के लिए है, तो इसे सार्वभौमिक नियम नहीं माना जा सकता।

निगमन (Nigamana):
इस आयत का संदेश सीमित और सन्दर्भ विशेष है, अतः इसे सम्पूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक मानना उचित नहीं।

आयत 14:

मगर उन लोगों ने पैग़म्बर को झुठलाया और उसकी कूँचे काट डाली तो ख़ुदा ने उन पर अज़ाब नाजिल किया फिर (हलाक करके) बराबर कर दिया।

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (प्रमाण) और Hetu (कारण)
प्रतीज्ञा (Pratijna):
ईश्वर ने दंड के रूप में उन लोगों को नष्ट किया।

हेतु (Hetu):
इस कथन के लिए कोई तर्कसंगत और ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।

उदाहरण (Udaharana):
भारतीय दार्शनिक ग्रंथों में दंड केवल न्यायसंगत प्रक्रिया और कर्तव्य पालन के आधार पर दिया जाता है।

उपनय (Upanaya):
यह आयत बिना प्रमाण के दंडात्मक कार्रवाई की बात करती है, जो न्याय दर्शन के प्रमेय और प्रमाण के सिद्धांतों के विरोध में है।

निगमन (Nigamana):
इस आयत में कारण और प्रमाण की अनुपस्थिति के कारण इसे तर्कसंगत और मानवता के लिए उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

आयत 15:

और उसको उनके बदले का कोई ख़ौफ तो है नहीं।

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (कारण) और Vyapti (व्याप्ति)
प्रतीज्ञा (Pratijna):
दंड से डरने का कोई कारण नहीं है।

हेतु (Hetu):
यह दंड और भय के सम्बन्ध को नकारता है, जो नैतिक नियंत्रण और अनुशासन के लिए आवश्यक है।

उदाहरण (Udaharana):
मनुस्मृति में दंड का उद्देश्य समाज में व्यवस्था बनाए रखना और भय पैदा कर अपराध से रोकना है।

उपनय (Upanaya):
इस आयत के अनुसार दंड का भय नहीं है, तो इसका नैतिक और सामाजिक तर्क कमजोर होता है।

निगमन (Nigamana):
यह आयत न्याय दर्शन के नैतिक और सामाजिक नियंत्रण के सिद्धांत के विरोध में है।

सारणी: आयत 11-15 का तुलनात्मक विश्लेषण

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना	तर्कहीनता का कारण
11	Hetu, Pramana	**बिना प्रमाण के आरोप**	**ऐतिहासिक और प्रत्यक्ष प्रमाण का अभाव**
12	Prameya, Hetu	**नकारात्मक छवि बिना न्याय**	**नैतिक और तर्कसंगत आधार का अभाव**
13	Vyapti	**सन्दर्भ विशेष नैतिक निर्देश**	**सार्वभौमिकता का अभाव**
14	Pramana, Hetu	**बिना प्रमाण के दंड**	**प्रमाण और तर्क की कमी**
15	Hetu, Vyapti	**दंड का भय न होने की बात**	**नैतिक अनुशासन के सिद्धांत का खंडन**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई तर्कसंगत और प्रमाण संबंधी कमियाँ हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी दावे के लिए स्पष्ट प्रमाण और तर्क होना अनिवार्य है। यहाँ पैग़म्बर की निंदा और ईश्वरीय दंड की बात बिना किसी प्रत्यक्ष या विश्वसनीय प्रमाण के की गई है, जो तर्कहीन और सार्वभौमिक मानवता के लिए अस्वीकार्य है। साथ ही, नैतिक और सामाजिक नियमों की सार्वभौमिकता और व्याप्ति का अभाव इन आयतों को सीमित और विवादास्पद बनाता है।

भारतीय दर्शन शास्त्र, जैसे भगवद् गीता और मनुस्मृति, न्याय और नैतिकता में प्रमाण और तर्क के महत्व को रेखांकित करते हैं, जो इन आयतों में अनुपस्थित है। अतः इन आयतों का संदेश मानवता के लिए उपयुक्त और तर्कसंगत नहीं माना जा सकता।